पूर्व मध्यकालीन यूरोप (लगभग 5वीं से 10वीं शताब्दी) में राजनीतिक स्थिति को समझने के लिए कई तत्वों को समझना आवश्यक है, जैसे कि रोमन साम्राज्य का पतन, जर्मनिक जनजातियों का प्रभाव, फ्रैंकिश साम्राज्य का उदय, वाइकिंग्स का आक्रमण, और सामंती व्यवस्था का विकास। इस समय में यूरोप की राजनीति में गहरी अस्थिरता और बिखराव था, जो निम्नलिखित प्रमुख विशेषताओं में दिखाई देता है:

1. रोमन साम्राज्य का पतन और उसके प्रभाव।
   - 5वीं शताब्दी में पश्चिमी रोमन साम्राज्य का पतन यूरोप की राजनीति के लिए एक बड़ा मोड़ था। 476 ईस्वी में रोम के अंतिम सम्राट रोमुलस ऑगस्टुलस के पतन के साथ, रोम के शासन का प्रभाव समाप्त हो गया, और यूरोप में केंद्रीय शक्ति का अभाव हो गया।
   - साम्राज्य के पतन के बाद, उसकी जगह कई छोटे-छोटे राज्य स्थापित हो गए, जिनमें कोई भी प्रभावशाली शक्ति नहीं उभर पाई। इसके कारण सत्ता का बंटवारा हो गया और राजनीतिक स्थिति अस्थिर हो गई।
   - रोम के पतन के बाद, यूरोप में कानूनी और प्रशासनिक ढांचे का बिखराव हुआ, जो बाद में सामंती व्यवस्था के विकास का कारण बना।

2. जर्मनिक जनजातियों का प्रभुत्व और नई शक्तियों का उदय
   - रोम के पतन के बाद यूरोप में कई जर्मनिक जनजातियाँ (जैसे, फ्रैंक्स, विसिगोथ्स, ऑस्ट्रोगोथ्स, लोम्बार्ड्स, वेंडल्स) प्रभावशाली बन गईं और अपने-अपने राज्य स्थापित किए।
   - इन जनजातियों ने पूर्व रोमन क्षेत्रों को अपने नियंत्रण में कर लिया, और उनकी राजनीतिक व्यवस्थाएं मुख्य रूप से जनजातीय परंपराओं पर आधारित थीं। उनमें अक्सर आपसी संघर्ष और सामरिक टकराव होता रहता था।
   - उदाहरण के लिए, गोथिक जनजातियों ने स्पेन में और लोम्बार्ड्स ने इटली में राज्य स्थापित किया। ये राज्य कभी स्थिर नहीं रहे और इन्हें लगातार अन्य जनजातियों और बाहरी हमलावरों से खतरा बना रहता था।

3. फ्रैंकिश साम्राज्य और शारलेमेन का उदय
   - 8वीं शताब्दी में, फ्रैंकिश साम्राज्य प्रमुख शक्ति के रूप में उभरा। शारलेमेन (चार्ल्स महान) ने अपने साम्राज्य का विस्तार किया और पश्चिमी यूरोप के एक बड़े हिस्से को एकीकृत किया।
   - शारलेमेन को 800 ईस्वी में पोप लियो III द्वारा "पवित्र रोमन सम्राट" की उपाधि दी गई, जिससे ईसाई चर्च और शासक के बीच गठबंधन को मजबूत किया गया। इससे शारलेमेन को धार्मिक वैधता प्राप्त हुई और चर्च के साथ उसके संबंध प्रगाढ़ हो गए।
   - शारलेमेन के साम्राज्य ने एक केंद्रीकृत राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास किया, और यूरोप में धार्मिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की नींव रखी, जिसे "कारोलिंगियन पुनर्जागरण" कहा जाता है। हालाँकि, शारलेमेन के उत्तराधिकारियों के अधीन यह साम्राज्य विभाजित और कमजोर हो गया।

4. धार्मिक शक्ति का प्रभाव और चर्च का राजनीतिक हस्तक्षेप
   - इस युग में, चर्च की राजनीतिक शक्ति अत्यधिक प्रभावशाली बन गई। पॉप का प्रभाव शासकों पर बढ़ता गया, और ईसाई धर्म को पूरे यूरोप में फैलाया गया। इसके माध्यम से यूरोप में धार्मिक एकता लाने का प्रयास किया गया।
   - चर्च ने राजा और सामंतों को अपना समर्थन प्रदान किया और साम्राज्यों के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाई। कई बार, चर्च ने भी राजनीतिक निर्णयों में हस्तक्षेप किया, जैसे राजा की नियुक्ति या उन्हें अभिषेक करना।
   - इस समय में मठ और चर्च भी बड़े भूस्वामी बन गए थे, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई और वे राजनीतिक रूप से भी शक्तिशाली हो गए।

5. **वाइकिंग्स का आक्रमण**:
   - 8वीं से 10वीं शताब्दी के दौरान, स्कैंडिनेविया के वाइकिंग्स ने यूरोप पर व्यापक आक्रमण किया। उन्होंने ब्रिटेन, फ्रांस, और अन्य क्षेत्रों पर हमला कर लूटपाट की।

- वाइकिंग्स के आक्रमण ने यूरोप की राजनीतिक और सामाजिक संरचना को कमजोर किया। उनके हमलों ने न केवल आर्थिक क्षति पहुंचाई, बल्कि शासकों के लिए सुरक्षा सुनिश्चित करना कठिन बना दिया।
- इन आक्रमणों ने कई यूरोपीय शासकों को सामंती व्यवस्था स्थापित करने के लिए प्रेरित किया, ताकि अपने क्षेत्र की रक्षा कर सकें।

6. **सामंती व्यवस्था का विकास**:
- इस अवधि में सामंती व्यवस्था का उदय हुआ, जिसमें राजा, सामंत (लॉर्ड्स), और उनके अधीनस्थ (वासल्स) के बीच भूमि के बदले सैनिक सेवा प्रदान करने का अनुबंध था।
- सामंती व्यवस्था के अंतर्गत राजा और सामंतों ने भूमि का स्वामित्व अपने अधीनस्थों को सौंपा, और बदले में उनसे सैनिक सेवा ली। यह व्यवस्था छोटे-छोटे स्वायत्त क्षेत्रों में विभाजित थी, जहाँ प्रत्येक क्षेत्र के अधिपति का अपने क्षेत्र में अधिकार था।
- यह व्यवस्था एक केंद्रीकृत प्रशासन की बजाय स्थानीय नेतृत्व पर आधारित थी, और इस कारण से यूरोप में कई छोटे-छोटे साम्राज्यों और राज्यों का अस्तित्व बना रहा।

7. **सामाजिक संरचना और अर्थव्यवस्था**:
- इस समय में यूरोप की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि आधारित थी। गाँव और समुदाय आत्मनिर्भर थे, और व्यापार की सीमा सीमित थी।
- सामाजिक रूप से, एक स्पष्ट वर्ग भेद था जिसमें राजा और सामंत सबसे ऊँचे स्तर पर थे, उनके नीचे नाइट्स और वासल्स थे, और समाज के निचले स्तर पर किसान (सर्फ) थे, जो सामंतों की भूमि पर काम करते थे और उन्हें उत्पादन का हिस्सा देते थे।
- इस तरह की सामाजिक संरचना ने शासकों को अपनी शक्ति बनाए रखने और अपनी भूमि की रक्षा करने में मदद की।

8. **राजनीतिक अस्थिरता और बिखराव**:
- पूर्व मध्यकालीन काल में यूरोप में कोई केंद्रीकृत शासन नहीं था, बल्कि कई छोटे-छोटे राज्य, साम्राज्य, और जनजातियाँ थीं।
- एक स्थायी राजनीतिक ढांचा विकसित नहीं हो पाया, और यूरोप के विभिन्न हिस्से लगातार युद्ध और आक्रमण का सामना कर रहे थे।

कुल मिलाकर, पूर्व मध्यकालीन यूरोप में सत्ता का बिखराव, धार्मिक और राजनीतिक शक्ति का मेल, और लगातार बाहरी आक्रमण एक विशिष्ट राजनीतिक स्थिति को दर्शाते हैं। इस काल ने आगे चलकर मध्यकालीन यूरोप की सामंती व्यवस्था और धार्मिक प्रभुत्व की नींव रखी।